पातञ्जलयोगदर्शन में व्यक्तित्व की अवधारणा

बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल
की एम.एड. (आर.आई.ई.) उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु
प्रस्तुत शोध–प्रबंध

सत्र 2011–12

मार्गदर्शिका

डॉ. रत्नमाला आर्य
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

शोधार्थिनी

पूजा चतुर्वेदी उपाध्याय
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली)
श्यामला हिल्स, भोपाल (म.प्र.)

— 11 : — 1

पातञ्जलयोगदर्शन में व्यक्तित्व की अवधारणा

बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल
की एम.एड. (आर.आई.ई.) उपाधि की आंशिक सम्पूर्ति हेतु
प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध

सत्र 2011–12

D-364

मार्गदर्शिका
09/04/12
डॉ. रत्नमाला आर्य
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

शोधार्थिनी
पूजा चतुर्वेदी उपाध्याय
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

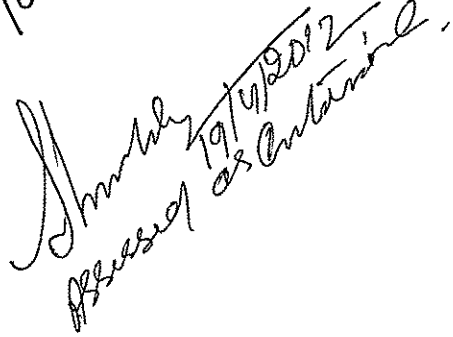

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली)
श्यामला हिल्स, भोपाल (म.प्र.)

घोषणा –पत्र

मैं, ***पूजा चतुर्वेदी उपाध्याय,*** छात्रा, एम.एड. (आर.आई.ई) यह घोषणा करती हूँ कि ***पातञ्जलयोगदर्शन में व्यक्तित्व की अवधारणा*** शीर्षक पर शोध–प्रबन्ध, मेरे द्वारा ***डॉ. रत्नमाला आर्य,*** सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल के मार्ग दर्शन में पूर्ण किया गया है।

यह शोध–प्रबन्ध मेरे द्वारा बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल की एम.एड. (आर.आई.ई) सत्र 2011–12 की उपाधि की आंशिक सम्पूर्ति हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सूचनाएँ विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त की गई है तथा यह प्रयास पूर्णतः मौलिक है।

स्थान : भोपाल

दिनाङ्क : 09.04.2012

शोधार्थिनी

09.04.2012

पूजा चतुर्वेदी उपाध्याय,

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,

भोपाल

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ***श्रीमती पूजा चतुर्वेदी उपाध्याय,*** छात्रा एम.एड., क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल ने बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल से शिक्षा शास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध "पातञ्जलयोगदर्शन में व्यक्तित्व की अवधारणा" मेरे मार्गदर्शन में विधिवत पूर्ण किया है।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध, शोध–अध्येता की मौलिक सङ्कल्पना और अध्यवसाय की परिणति है, जो पूर्व में इस आशय से विश्वविद्यालय में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

उक्त शोध–प्रबन्ध बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल की एम.एड. (आर.आई.ई.) उपाधि सत्र 2011–12 की आंशिक सम्पूर्ति हेतु प्रस्तुत है। मैं प्रस्तुत शोध कार्य की सम्पुष्टि करती हूँ।

स्थान : भोपाल

दिनाङ्क : 09.04.2012

मार्गदर्शिका

09/04/12

डॉ. रत्नमाला आर्य

सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग,

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

प्राक्कथन

निरन्तर शोध हेतु गूढ तत्त्वों को बीज रूप में प्रदान करने वाली अद्भुत मेधा सम्पन्न मनीषियों, ऋषि–मुनियों व आचार्यों की साहित्य–साधना को प्रणाम करते हुए देव–वाणी संस्कृत और उसमें निबद्ध दर्शन के प्रति मेरे मन में जिज्ञासा का उद्भावन और अध्ययनार्थ प्रेरणा प्रदान करने वाले ईश्वर के प्रति श्रद्धासिक्त नमन है।

संस्कृत में शोधोपाधि प्राप्त करने के उपरान्त जब शिक्षा–शास्त्र में मैनें प्रवेश किया तब शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन करते हुए एक तुलनात्मक दृष्टिकोण विकसित होने लगा कि प्राचीन संस्कृत साहित्य और दर्शन के ग्रन्थों में भी ऐसे अनेक मनोवैज्ञानिक तत्त्वों का विवेचन है जिसे आधुनिक विद्वान प्रतिपादित कर रहे हैं, तभी मैंनें निश्चित किया कि शिक्षा आचार्य में इसी क्षेत्र में शोध कार्य करने का प्रयास करूँगी।

मेरे इस निश्चय व अभिलाषा में प्रस्तुत शोध–कार्य की मार्गदर्शिका आदरणीया ***डॉ. रत्नमाला आर्य,*** ने पूर्ण विश्वास व्यक्त किया, तथा उन्हीं के सरल स्नेह पूर्ण व्यवहार, सटीक निर्देशन तथा परिश्रम से यह कार्य पूर्णता को प्राप्त हुआ। उनके इस अनुग्रह हेतु मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल के भूतपूर्व प्राचार्य, आदरणीय **डॉ. के.बी. सुब्रह्मण्यम** तथा वर्तमान प्राचार्य सम्माननीय **डॉ. एम.एन बापट** महोदय के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होनें अध्ययन हेतु अनुकूल वातावरण एवं सुविधाएँ प्रदान कर अनुगृहीत किया।

मैं ईश्वर के प्रति कृतज्ञहृदय होकर स्वयं को भाग्यशालिनी समझती हूँ कि सरस्वती के उपासक साहित्य–साधक शिक्षा विभाग के अध्यक्ष पूज्य ***डॉ. बी.रमेश बाबू*** का सान्निध्य मुझे प्राप्त हुआ। अध्यापन का एक नया आदर्श और चिन्तन की एक नवीन दृष्टि प्रदान कर उन्होंनें मुझे उपकृत किया, इस हेतु मैं सदा उनके प्रति श्रद्धावनत हूँ।

मैं हृदय से कृतज्ञता करती हूँ आदरणीय डॉ.के.के. खरे एवं आदरणीय डॉ. एन.सी. ओझा के प्रति जिन्होनें विशेष रूप से शोध कार्य के लेखन हेतु अमूल्य परामर्श प्रदान कर सहयोग किया। सम्माननीय डॉ. एस.के. गुप्ता, डॉ. किरण माथुर, श्री सञ्जय पण्डागले, श्री आनन्द वाल्मीकि, डॉ. शिवशङ्कर, सुश्री जुबली पद्मनाभन, श्री वसन्त कुमार, सुश्री प्रीति सक्सेना, सुश्री पुष्पा नामदेव तथा शिक्षा विभाग व संस्थान के समस्त गुरूजनों के प्रति हार्दिक धन्यवाद व

आभार ज्ञापित करती हूँ जिन्होंने शोध–कार्य प्रस्तुतीकरण सङ्गोष्ठी के समय अपने अनुभव सम्पन्न सुझावों तथा टिप्पणियों से प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध को परिमार्जन में सहयोग करते हुए उसे प्रशस्ततर बनाने हुए प्रेरित किया पुस्तकों में निहित ज्ञान–भण्डार को हमारे लिए सुलभता से उपलब्ध कराने हेतु संस्थान के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री पी.के. त्रिपाठी एवं समस्त पुस्तकालय कर्मचारियों के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ।

उक्त शोध–कार्य के विषय निर्धारण तथा सम्पन्नता में पूज्य गुरूवर ***डॉ. ने भानुमूर्ति,*** सह प्राध्यापक, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, के गभीर दार्शनिक चिन्तन तथा तीक्ष्ण आधुनिक दृष्टि का महत् योगदान है अतः उनके प्रति मैं सदैव नतमस्तक हूँ।

निरन्तर अध्ययन की मेरी आकाङ्क्षाओं को पूर्ण करने में सहभागी मेरे पति डॉ. मनमोहन उपाध्याय ने शोध विषय पर विमर्श करते हुए अनेक कठिनाइयों का समाधान कर इस कार्य को पूर्ण करने में सहयोग किया, जिसके अभाव में कार्य की पूर्णता असम्भव ही थी। मेरे श्वश्रू पूजनीया श्रीमती रामकली उपाध्याय के असीम स्नेह और आशीर्वादों से ही यह कार्य सम्पन्न हो सका है अतः उनके चरणों में मेरी प्रणामाञ्जलि समर्पित है। पुत्रद्वय अनुप्रणव तथा अभिप्रणव को भी मैं धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने इस कार्य को पूर्ण करने हेतु अनुकूलता प्रदान कर मेरा भावनात्मक सहयोग किया।

कृतज्ञता–ज्ञापन के इस क्रम में मैं अपने समस्त सहपाठियों तथा प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी सभी आत्मीय जनों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

मेरी अध्ययन् यात्रा के मूल में मेरे पूज्य पिताजी श्री वासुदेव चतुर्वेदी तथा माँ श्रीमती कविता चतुर्वेदी की अनन्त तपस्या और त्याग सन्निहित है, उनकी सर्वदा ऋणी में अपनी आस्था के पुष्प उनके चरणों में समर्पित कर स्वयं को धन्य समझती हूँ।

अल्पज्ञ मानव की सर्वज्ञता तो असम्भव ही है फिर भी एक विनम्र प्रयास के रूप में यह शोध प्रबन्ध प्रस्तुत है।

स्थान – भोपाल
दिनाङ्क – 09.04.2022

विनयावनता
09.04.2022
पूजा चतुर्वेदी उपाध्याय

❖ घोषणा–पत्र

❖ प्रमाण–पत्र

❖ प्राक्कथन

❖ विषयानुक्रमणिका

विषयानुक्रमणिका

अध्याय	शीर्षक	पृष्ठ क्रमाङ्क
प्रथम–अध्याय	शोध परिचय	1–21
	1.0 प्रस्तावना	1–2
	1.1 व्यक्तित्व क्या है ?	3
	1.1.1 पाश्चात्य अवधारणा	3–4
	1.1.2 भारतीय अवधारणा	4–5
	1.1.2.1 उपनिषदों मे वर्णित व्यक्तित्व संरचना	5–8
	1.1.2.2 श्रीमद्भगवद्गीता में व्यक्तित्व की अवधारणा	8–9
	1.1.2.3 साङ्ख्य–दर्शन में व्यक्तित्व–अवधारणा	9
	1.1.2.4 अद्वैतवेदान्तदर्शन एवं व्यक्तित्व	9–10
	1.1.2.5 जैन दर्शन में सम्पूर्ण व्यक्तित्व की सङ्कल्पना	11
	1.1.2.6 बौद्ध–दर्शन में व्यक्तित्व की सङ्कल्पना	11–12
	1.1.2.7 श्री अरविन्द के मतानुसार ' व्यक्तित्व' की अवधारणा	12–13
	1.1.2.8 अन्य प्रसिद्ध आधुनिक भारतीय विचारकों के मतानुसार व्यक्तित्व अवधारणा	14–15
	1.2 योग क्या है	15–16
	1.3 पातञ्जलयोगदर्शन का सामान्य परिचय	16–17

1.4 राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा 2005 एवं योग शिक्षा 17–18

1.5 अध्ययन की आवश्यकता 19–20

1.6 शोध कार्य का शीर्षक 21

1.7 प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली 21

1.8 शोध कार्य के उद्देश्य 21

1.9 शोध प्रश्न 21

1.10 शोध की परिसीमा 21

द्वितीय–अध्याय सम्बन्धित–साहित्य का पुनरावलोकन 22–29

2.0 प्रस्तावना 22

2.1 सम्बन्धित–साहित्य के पुनरावलोकन का महत्त्व 22–23

2.2 पूर्वसम्पादित सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन 23–28

2.3 उपसंहार 29

तृतीय–अध्याय शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया 30–36

3.0 प्रस्तावना 30

3.1 सैद्धान्तिक एवं दार्शनिक शोध 30

3.2 विषय वस्तु विश्लेषण प्रविधि 31

3.3 शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया 32

3.3.1 ग्रन्थ–चयन 32–33

3.3.2 शोध समस्या से सम्बन्धित सूत्रों का चयन 33–36

3.3.3 सूत्र विश्लेषण एवं व्याख्या 36

3.3.4 तुलनात्मक विश्लेषण 36

3.3.5 सामान्यीकरण 36

3.4.6 निष्कर्ष एवं शैक्षिक निहितार्थ प्रतिपादन 36

चतुर्थ–अध्याय व्यक्तित्व की अवधारणा का विश्लेषण एवं व्याख्या 37–54

4.0 प्रस्तावना 37
4.1 पातञ्जलयोग दर्शन में व्यक्तित्व मीमांसा 37
4.2 पातञ्जल योग दर्शन में व्यक्तित्व के निर्धारक तत्त्वों का विवेचन 38–45
4.3 पातञ्जल योग दर्शन में व्यक्तित्व के प्रकार 46–48
4.4 पातञ्जल योग दर्शन में व्यक्तित्व की विकास प्रक्रिया 48–54

पञ्चम–अध्याय पातञ्जलयोगदर्शन में निहित व्यक्तित्व अवधारणा का महत्व एवं प्रासङ्गिकता 55–58

5.0 प्रस्तावना 55
5.1 अन्य प्राचीन भारतीय विचारधाराएँ एवं योगदर्शन का महत्त्व एवं प्रासङ्गिकता 55–56
5.2 प्रसिद्ध पश्चिमी व्यक्तित्व सिद्धान्त एवं यौगिक व्यक्तित्व अवधारणा का महत्व एवं प्रासङ्गिकता 57–58

षष्ठ–अध्याय शोध–सार एवं निष्कर्ष 59–63

6.0 प्रस्तावना 59
6.1 शोध–सार 59–60
6.2 प्रस्तुत शोध–अध्ययन के निष्कर्ष 61
6.3 प्रस्तुत शोध के शैक्षिक निहितार्थ 62
6.4 भावी शोध हेतु सुझाव 63

सन्दर्भ